By- Dr. Shailesh Kumar
dept. of Economics
Raja Singh College Siwan

3.5.20

रोजगार का क्लासिकी सिद्धान्त :-

(The classical theory of employment)

क्लासिकी सिद्धान्त यह मानता है कि पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में बिना स्फीति के पूर्ण रोजगार पाया जाता है। मजदूरी-कीमत लोचशीलता आदि होने पर, आर्थिक प्रणाली में स्वतः शक्तियाँ पाई जाती है जो पूर्ण रोजगार कायम रखने की प्रवृति रखती है और उसी स्तर पर उत्पादन करती है। अतः पूर्ण रोजगार एक स्थिति मानी जाती है और इस स्तर से विचलन (deviation) कुछ असमान्य स्थिति होती है जो अपने आप पूर्ण रोजगार की अग्रसर होती है।

क्लासिकी सिद्धान्त कुछ मान्यताएँ पर आधारित है जो निम्न है।

(1) बिना स्फीति के पूर्ण रोजगार पाया जाता है।

(2) बिना विदेशी व्यापार के एक बंद अबंध नीति (laissez faire) वाली पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था पाई जाती है।

(3) श्रम और वस्तु बाजारों में पूर्ण प्रतियोगिता पाई जाती है।

(4) श्रम समरूप होता है।

(5) अर्थ व्यवस्था का कुल उत्पादन, उपभोग और निवेश के खर्चों में विभाजित है।

(6) मुद्रा की मात्रा दी हुई है।

(7) मजदूरी और किमतें लोचशील है।

(8) मुद्रा मजदूरी और वास्तविक मजदूरी का सीधा और समानुपातिक proportional संबंध है।

(9) पूँजी स्टॉक और प्रौद्योगिकी ज्ञान दिए हुए है।

Scanned by CamScanner